नदियों के पहरेदार

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

बाल कहानी पुस्तिका

नदियों के पहरेदार

संध्या जोशी ✡ रूचि बड़ोला ✡ एस.ए. हुसैन

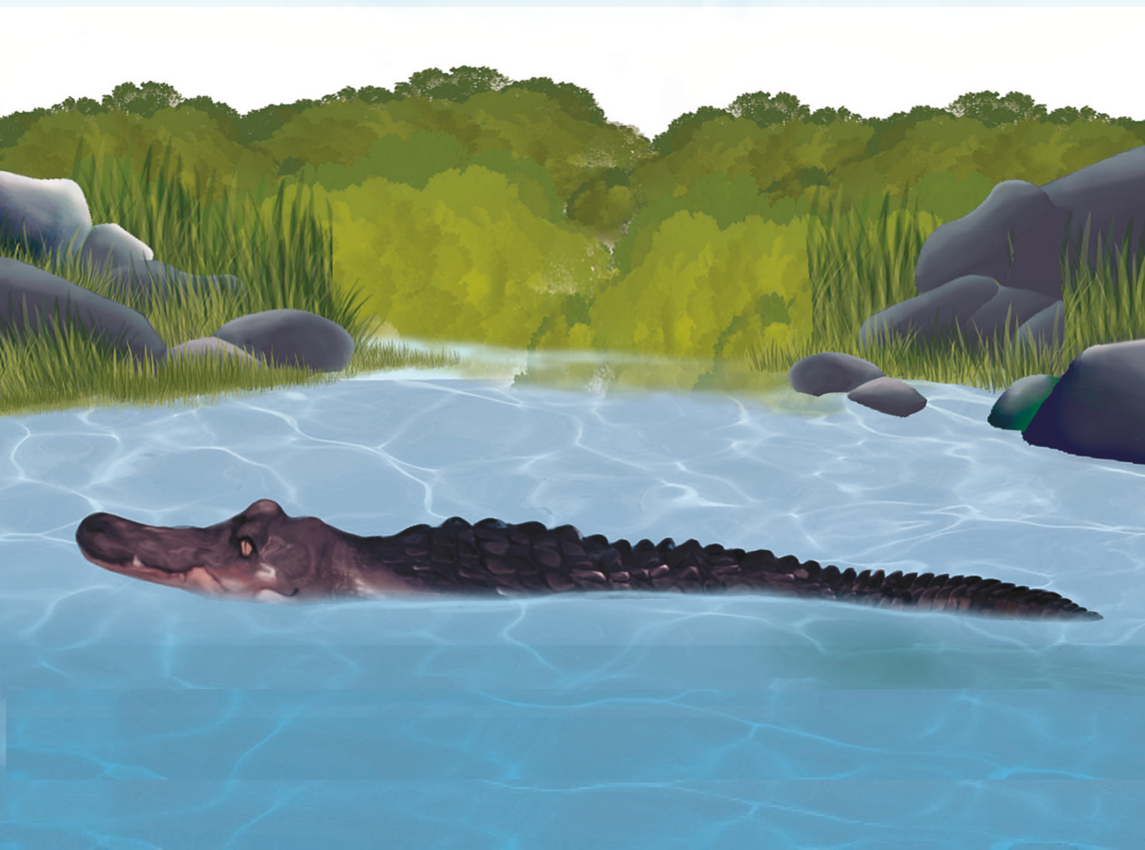

नदियों के पहरेदार

2024

गंगा की स्वच्छता के लिए गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एवं पारिस्थितिकी सेवाओं के रखरखाव के लिए नियोजन एवं प्रबन्धन

परियोजना अन्वेषक

रुचि बडोला एवं सैयद एनुल हुसैन

जलीय जीव संरक्षण निगरानी केंद्र भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून

यह पुस्तिका जलशक्ति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के अंतर्गत परियोजना "गंगा की स्वच्छता के लिए गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एंव पारिस्थितिकी सेवाओं के रखरखाव के लिए नियोजन एवं प्रबन्धन" द्वारा निर्गत की गई है।

लेखन

संध्या जोशी

रुचि बडोला

एस.ए. हुसैन

प्रारूप

महेश पांडे, ख्याति चौहान

इलस्ट्रेशन

अमन उनियाल

ख्याति चौहान

Google

उद्धरण

डब्लूआइआई गैकमैक (2023) "गंगा की स्वच्छता के लिए गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एंव पारिस्थितिकी सेवाओं के रखरखाव के लिए नियोजन एवं प्रबन्धन"। गंगा जलीय जीव संरक्षण निगरानी केन्द्र भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून भारत। पी.पी. 34

भारतीय वन्यजीव संस्थान

चन्द्रबनी, देहरादून - 248001

उत्तराखंड, भारत

प्रकाशक एवं मुद्रक

समय साक्ष्य, देहरादून # 9412058952

ISBN 978-81-976054-1-3

मूल्य

रू 250.00

भूमिका

बच्चों जलीय जीवों की कहानी की कड़ी में आज हम आपको सुनाने जा रहे हैं, गंगा में रहने वाले मगर एवं घड़ियाल की कहानी। मगर और घडियाल पृथ्वी के सबसे पुराने जीवों की श्रेणी में आते हैं। माना जाता है कि ये पृथ्वी से विलुप्त हो चुके डायनासॉर के समकक्षी हैं। डायनासॉर प्राकृतिक आपदाओं की वजह से पृथ्वी से विलुप्त हो गये। किंतु उनके ये समकक्षीय मित्र अभी भी पृथ्वी की शान बढ़ा रहे हैं, लेकिन अब इनका जीवन भी संकट में है। संकट ग्रस्त होने के अनेक कारण हैं। सबसे बड़ा कारण तो हम ही हैं। हम कैसे कारण हैं? इस पर चर्चा आगे कहानी में की जायेगी। पहले हम इस प्रजाति के विषय में कुछ जानकारी बढ़ा लें। घड़ियाल और मगर सरीसृप प्रजाति में आते हैं। सरीसृप के रूप में उन जीवों को जाना जाता है जो रेंग कर चलते हैं, जैसे साँप, छिपकली, मगर तथा घड़ियाल आदि। मगर और घड़ियाल उभयचरों की तरह पानी और धरती दोनों में ही रह लेते हैं, किंतु सरीसृप और उभयचर में जहाँ बहुत सारी समानतायें होती हैं तो वहीं कुछ असमानतायें भी होती हैं। तो आओ पहले बात करते हैं समानताओं की, सरीसृप और उभयचर दोनों ही ठंडे खून वाले प्राणी हैं।

अपने शरीर के तापमान को नियंत्रित करने के लिए ये बाहर के तापमान पर निर्भर करते हैं। ये दोनों सर्वहारी होते हैं यानी माँसाहारी और शाकाहारी दोनों ही होते हैं। दोनों ही शिकारियों से बचने के लिए अपनी त्वचा का रंग कुछ हद तक बदल सकते हैं और ऐसा करके वो अपने शरीर के तापमान पर नियंत्रण भी रख सकते हैं। दोनों ही अपनी रक्षा के लिए छलावरण, काटने तथा शरीर को फुलाने जैसी प्रक्रियायें अपनाते हैं तथा दोनों की ही दृष्टि तेज होती है, और असमानताओं की बात करें तो उभयचर सांस लेने के लिए गलफड़े और फेफड़े दोनों का उपयोग करते है, वहीं सरीसृप के सांस लेने के लिए केवल फेफड़े होते हैं। उभयचर में शरीर रूपांतरण की प्रक्रिया होती है, यानि फेफड़े बनने की प्रक्रिया से पूर्व ये गलफड़ों से सांस लेते हैं। सरीसृप में रूपांतरण प्रक्रिया नहीं होती है बच्चे वयस्कों के ही समान होते हैं, बस आकार में छोटे होते हैं। उभयचर की त्वचा नम व लसलसी होती है। सरीसृप की त्वचा शुष्क व पपड़ीदार होती है, इनके शल्क केराटीन के बने होते है, त्वचा शल्कों के नीचे पाई जाती है।

उभयचर पानी व नम स्थानों में अण्डे देते हैं। अण्डे एक मुलायम झिल्ली के आवरण से ढके रहते हैं। सरीसृप आमतौर पर जमीन में अण्डे देते हैं, इन पर कठोर व सख्त आवरण होता है। तो ये थे सरीसृप और उभयचर को एक दूसरे से भिन्न करने वाले कारण; बच्चों! हम आप लोगों को बाल कहानी पुस्तिका की श्रृंखला के रूप जलीय जीवों के प्रति जागरूकता बढ़ाने एवं जानकारी देने का प्रयास, रोचक तरीकों से देने की कोशिश कर रहे हैं। इससे पूर्व हम आपके बीच पहली बाल कहानी पुस्तिका कछुए की कहानी "बिन वेतन की करें सफाई" के रूप में लाये थे, उसी क्रम की दूसरी कड़ी में आपके सामने उपस्थित है, सरीसृप प्रजाति के मोनू मगर तथा छोटू घड़ियाल की कहानी "नदियों के पहरेदार"। हम कहानी के माध्यम से जान पायेंगे एक नदी के पर्यावरण संतुलन में तथा एक स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र को बनाये रखने में इन प्रजातियों की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है। साथ ही उन खतरों की बात भी करेंगे जो इन प्रजातियों पर मंडरा रहे हैं।

संध्या जोशी
रुचि बडोला
एस.ए.हुसैन

नदियों के पहरेदार

नदी के एक छोर पर बसा है एक छोटा सा गाँव सोनपुर। सोनपुर गाँव के वासी संसाधनों से सम्पन्न और अपने में ही खुश रहते, बाहरी दुनिया से उनका नाता जरा कम ही रहता। वे खुश और स्वस्थ थे क्योंकि उनके पास अपने संसाधन जो थे! वो अपनी प्यारी नदी से मछलियाँ पकड़ते और उन्हें बाजार में बेचते। मछलियाँ बेचने से जो उनकी आय होती उसी से अपने परिवार का पालन पोषण करते। बची हुई मछलियाँ उनके भोजन का हिस्सा होती। गाँव में हारी बीमारी जरा कम ही होती। इसका कारण था, भोजन में मछलियों का शामिल होना। नदी के रेशमी रेतीले कछार पर वो मौसमी सब्जियाँ उगाते। गर्मियों के मौसम मे वहाँ पर उगने वाले मीठे तरबूज, खरबूज तथा ककड़ी की मिठास ने सोनपुर को दूर-दूर तक प्रसिद्ध कर दिया। दूर-दूर से लोग वहाँ खरबूज, तरबूज, ककड़ियाँ खरीदने आते। गाँव के लोग अपने संसाधनों के प्रति जागरूक थे। वो जानते थे कि उनके पास कौन सी सम्पदा है। वो उसे बचाये रखने के लिए भरसक प्रयास करते। और उनके पास थी उनकी प्यारी गंगा जो उनका एक माँ जैसा ख्याल रखती। गंगा जानती थी कि उसके ये बच्चे किस कदर उस पर निर्भर है और एक माँ होना क्या होता है। नदी के दूसरे छोर पर जंगल था, जहाँ की ठंडी शुद्ध हवा सोनपुर गाँव के

वातावरण को और भी खुशनुमा बना देती। जंगल में रहने वाले पक्षियों के कलरव का मधुर संगीत गाँव तक सुनाई पड़ता। वहीं दूसरे छोर पर ही छोटू घड़ियाल और मोनू मगर का परिवार रहता था।

दोनों के परिवार आपस में मित्र थे। वैसे तो और भी मगर और घड़ियाल अपने परिवार के साथ वहाँ रहते थे पर छोटू और मोनू अपनी मित्रता के कारण औरों से अलग थे। दोनों के बच्चे साथ खेलते उठते बैठते स्कूल जाते और नदी में खेलते, नदी की रेशमी रेत पर धूप सेंकते और मजे करते। जंगल के सभी प्राणी नदी में पानी पीने आते पर, थोड़ा सावधानी रखते, गलती से किसी मगर की नजर पड़ गई तो भाई फिर गये काम से। अब मगर भी क्या करें, प्रकृति के नियम ही कुछ ऐसे हैं! सभी तो एक दूसरे पर निर्भर हैं। अगर ये सब ना हो तो कोई कैसे जी पायेगा। छोटू और मोनू भी अपने नियमों से बंधे थे। मोनू अपने बड़े जबड़े के कारण जहाँ बड़े शिकार कर पाता वहीं छोटू अपनी पतली थूथन और नाक के घड़े के कारण केवल छोटी मछलियाँ, मेंढक कीड़े और साँप वगैरह ही मार पाता। मोनू तो कुछ भी खा सकता था या तो खुद शिकार करता या फिर गाँव वाले जो जानवर मर जाते उनको गंगा में बहा देते, तो मोनू को खाने की कभी कोई कमी नहीं होती। मोनू था बड़ा ताकतवर मगर, लेकिन छोटू के साथ ऐसा नहीं था, एक तो गाँव वाले भी मछलियों का शिकार करते और शिकार के लिए जाल का उपयोग करते।

जिसमें मछलियों के साथ छोटू भी फँस सकता था। सुना है......... छोटू के चाचा का बेटा मनकू जाल में फँस कर मर गया था। कितना रोये थे सब...... चाचा का परिवार कितना दुखी था। चाचा तो बाद में ये जगह ही छोड़कर चले गये थे दूर चम्बल के किनारे। वहाँ और भी बहुत से घड़ियाल रहते हैं, और नदी भी काफी साफ है!

छोटू को हमेशा अपने बच्चों के जाल में फँसने का भय सताता। घड़ियाल अपने बच्चों से कुछ ज्यादा प्यार जो करते हैं। लेकिन छोटू किसी भी हाल में अपने मित्र मोनू को छोड़ कर कहीं नहीं जाना चाहता था। दोनों की पक्की दाँत काटी दोस्ती जो थी! सारे मगर और घड़ियाल उनका मजाक बनाते कि घड़ियाल और मगर की भी कोई दोस्ती होती है? पर उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता, वो थे अपने में मस्त। वो दुनिया को दोस्ती की एक मिसाल जो देना चाहते थे। तो बात कर रहे थे! मोनू मगर और छोटू घड़ियाल की।

मोनू – छोटू कहाँ हो भाई! आज सुबह की सैर पर नहीं चलना है क्या?

छोटू– मोनू भाई बस तैयार ही हूँ! सोच ही रहा था कि तुम आने वाले होगे। बस जरा जैकेट पहन लूं। ठंड लग गई तो... भाई तबियत खराब हो जायेगी। चलो अब चलते हैं ।

मोनू – अरे! कहाँ ठंड, कितना तो सुहाना मौसम है, रेत पर जॉगिंग करेंगे सब ठंड वंड भाग जायेगी। पसीना आने लगेगा।

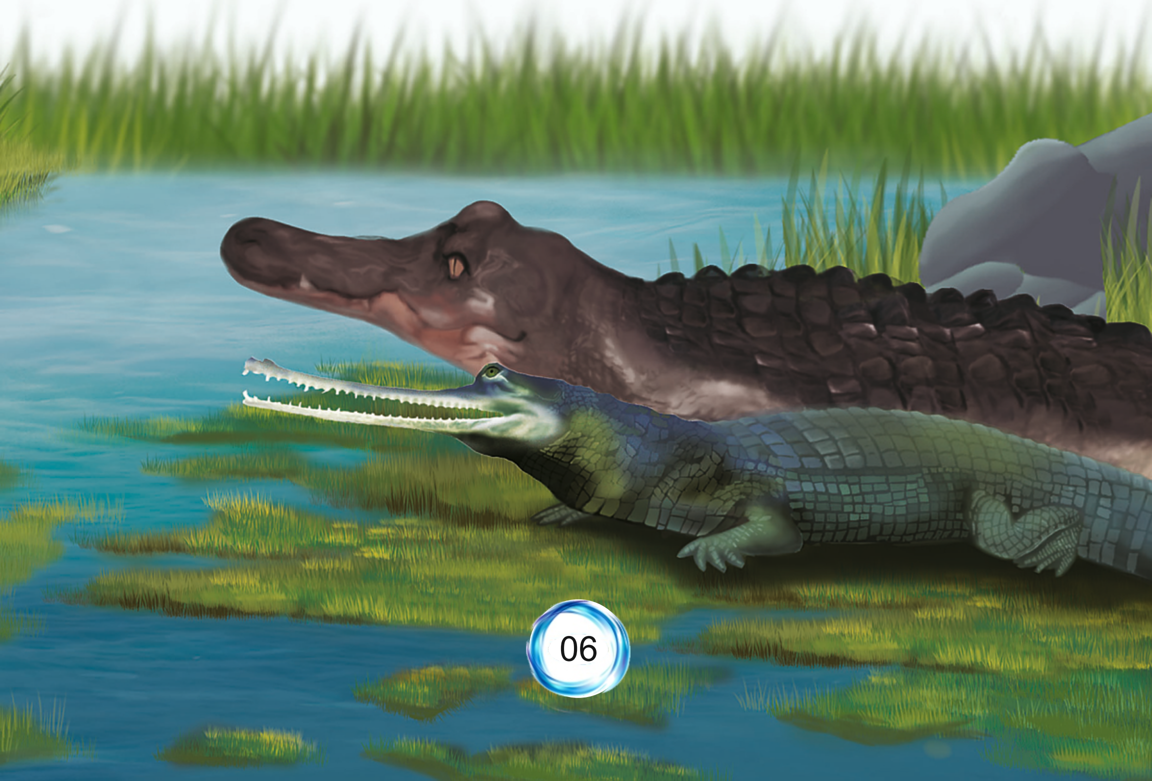

छोटू– वो तो ठीक है पर ठंड से तो बचना ही चाहिये और तुम्हारी बात और है भैया! इतनी मोटी खाल जो ओढ़े हो ऊपर से कहाँ से लगेगी ठंड ? मेरी खाल कहाँ उतनी मोटी है! मुझे तो कुछ पहनना ही होगा। लो आ गये हम रेत में। काफी लोग आ चुके हैं।

मोनू– भाई, मैं तो जरा जॉगिंग कर लेता हूँ, बहुत मोटा हो रहा हूँ, ज्यादा मोटापा सेहत के लिए हानिकारक होता है! और छोटू भाई ये खाल ही तो हमारी दुश्मन है। इसी के कारण तो मारे जाते हैं हम! भाई पतला हो जाउँगा तो क्या पता जान भी बच जाये........हा हा हा!

छोटू– हा हा हा! भाई मैं तो योगा ही करूँगा! मोनू दोस्त तुम तो भाग सकते हो क्योंकि तुम्हारे पांव जमीन में भागने लायक हैं। पर हमारे पैर तो तैरने के लिए ही बने हैं दोस्त! इनमें लगी झिल्लियों के कारण हम जमीन पर जरा कम ही चल पाते हैं! तो भाई मैं तो योगा ही करूँगा। योगा करने से सब तरह के रोगों से दूर रहा जा सकता है।

मोनू – आह! अब नहीं दौड़ा जा रहा! दो किलोमीटर तो दौड़ लगा ही ली होगी! और छोटू भाई हो गया योगा? चलो थोड़ी देर धूप में लेट कर थकान दूर करते हैं। वाह! कितना मजा आ रहा है, गर्म रेत पर लेटने में सारे बदन की सिकाई हो रही है। मन कर रहा है पूरे दिन यहीं पड़ा रहूं। ये जो खाने के इन्तजाम के लिए भटकना पड़ता है वो बड़ा सर दर्द है! थक जाते हैं, दिन भर ये सब करके।

छोटू– हाँ दोस्त ! मछलियाँ भी कम ही दिखाई पड़ रही हैं। समझ नहीं आ रहा जो गंगा मैया सदियों से हमारा और हम जैसे अनेकों जीवों की अन्नपूर्णा थी, अचानक क्यों रूष्ट होती जा रही हैं। लग रहा है जैसे सब कुछ बदल रहा है। आदमी, मौसम, दुनिया सब बदल गई है। पहले सब कितना अच्छा था कितना व्यवस्थित ! सबको ही एक दूसरे का कितना ध्यान था, सब एक दूसरे का आदर करते थे, संसाधनों के रखरखाव की चिंता किया करते थे ! पर अब ऐसा कुछ नहीं है। भैया ! तुम्हारा तो कुछ ना कुछ खाने का जुगाड़ हो ही जाता है पर हमारे को तो अपना भविष्य अंधकार में दिखलाई पड़ रहा है। तुम तो सब कुछ खा लेते हो, सड़ा गला माँस, पशु, पक्षी पर हम तो केवल मछलियाँ, छोटे मोटे कीड़ों और मेंढक पर ही गुजर बसर किया करते हैं। ये सब ऐसा ही चलता रहा तो हमारे बच्चे क्या खाकर जियेंगे। मुझे तो इसी चिंता में नींद नहीं आती।

मोनू– छोटू भाई ! चलो, अब घर चलें ! बच्चों को स्कूल भी तो छोड़ना है। सोच रहा हूँ रास्ते से कुछ नाश्ता वगैरह ले जाऊं। तुम भी कुछ देख लो बच्चों के नाश्ते के लिए। मुझे तो अगर कुछ माँस वाँस मिल जाये तो बच्चों का लंच जैसा कुछ हो जायेगा।

छोटू– हाँ, मैं भी कुछ ऐसा ही सोच रहा हूँ, कुछ छोटी मछली वछली मिल जाये तो दिन में खाने को इन्तजाम नहीं करना पड़ेगा। शाम की तो शाम को देखी जायेगी।

मोनू– हाँ, छोटू भाई ! खाने की दिक्कत तो हो ही गई है। संकट तो सभी जलीय जीवों पर आया हुआ है। नदियों का बढ़ता प्रदूषण और जो तथाकथित विकास की दौड़ है, उसमें सब ही चपेट में आ रहे हैं। यहाँ तक कि इन्सान भी।

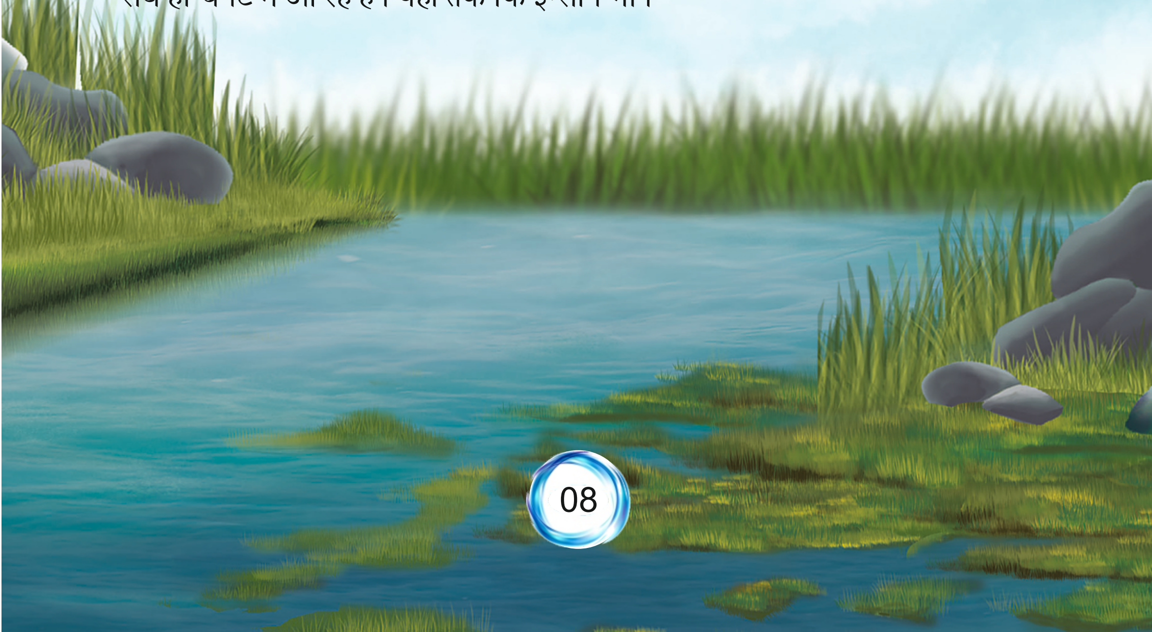

छोटू– हाँ, दोस्त! देखो ना बिजली उत्पादन के लिए जो बड़े बांध बन रहे हैं, उनसे हमारे घरों को कितना नुकसान पहुंच रहा हैं। और रेत खनन से हमारे अण्डे बच्चे तक मर रहे हैं। कब आयेगा इन्सानों को ये समझ में कि हम भी उनके साथ प्रकृति का हिस्सा ही हैं। उनके दोस्त हैं हम!

मोनू– हाँ दोस्त! सच कह रहे हो तुम। अब हमारे ऊपर ही सारी जिम्मेदारी है। मैं सोच रहा हूँ जरा उस पार गाँव के किनारे एक चक्कर लगा कर आंऊ क्या पता कोई मुर्दा जानवर या इन्सान पानी में पड़ा मिल जाये। इस बहाने नदी की सफाई भी हो जायेगी और बच्चों के लिए बढ़िया खाने का इन्तजाम भी हो जायेगा।

छोटू– हाँ चलो वहीं चलते हैं मैं भी वहीं कुछ खोज लूँगा खाने के लिए। पर भैया बस्ती के ज्यादा नजदीक नहीं जायेंगे, वहाँ मछुवारों के जाल लगे रहते हैं, फँस गये तो लेने के देने पड़ जायेंगे।

मोनू– देखो कुछ दिख तो रहा है वहाँ पर तैरता हुआ, लगता है कोई मरा हुआ जानवर है। मेरा तो काम हो गया, पूरे परिवार के लिए भोजन का जुगाड़ हो गया ।

छोटू– मुझे भी कुछ मछलियाँ मिल तो गई हैं, पर इतनी काफी नहीं होंगी। लगता है शाम को फिर खोजनी पड़ेंगी। चलो! अब घर की तरफ चलें, बच्चे इन्तजार कर रहे होंगे।

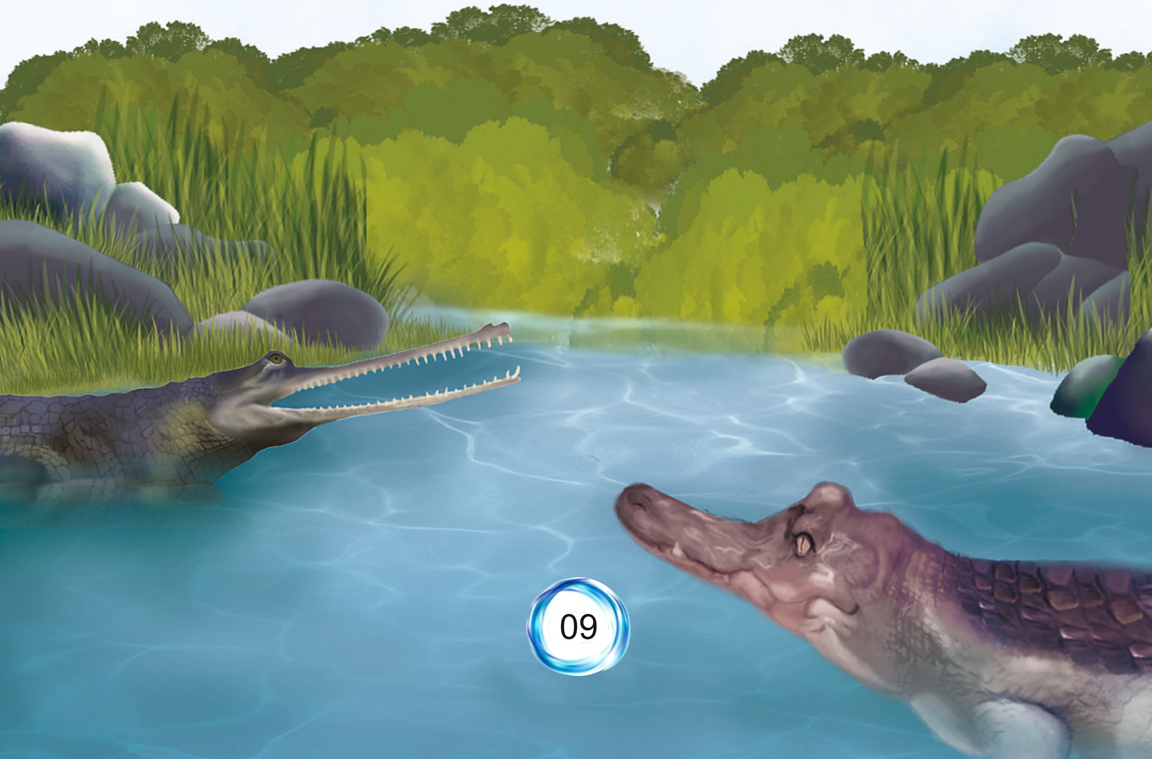

मोनू– चलो–चलो ! बच्चों को भूख लगी होगी, खा पी कर स्कूल भी तो जायेंगे। घर पहुंच कर ......

मोनू – निक्की, चिंटू कहाँ हो तुम लोग ! अभी तक सो कर नहीं उठे क्या ? देखो ! हम तो कसरत व्यायाम करके आ भी गये। जल्दी आओ ! सब मिलकर नाश्ता करते हैं। देखो आज तो भर पेट नाश्ता भी है और ये रात तक के लिए खाना भी ।

निक्की– पापा ! आप तो इतना सारा ले आये। आज क्या बात है ? लगता है कुछ बड़ा जानवर हाथ लग गया आपके !

मोनू – अरे नहीं बच्चों ! मेरे हाथ नहीं लगा। थोड़ा उस पार गया था गाँव में कोई जानवर मरा होगा लोगों ने पानी में फेंक दिया। बस, मैंने सोचा जब मरा हुआ जानवर मिल ही गया है, तो शिकार करने की क्या जरूरत है। इसी को ले जाता हूँ। अब नदी की सफाई की जिम्मेदारी भी तो हम जैसे जीवों के कन्धों पर ही है। चलो, अब जल्दी नाश्ता करो। फिर स्कूल भी जाना है।

चिंटू– पापा ! आपके साथ तो छोटू चाचा भी गये थे, वो आ गये क्या ? आजकल सोनी और टिल्लू को रोज स्कूल आने में देर हो जाती है। बता रहे थे कि पापा को अक्सर खाना ढूंढने में देर हो जाती है। क्या बात है ? पापा ! छोटू चाचा जल्दी शिकार नहीं कर पाते क्या ?

मोनू– अरे बेटा ! छोटू आज कल परेशान रहता है। आजकल उसे खाना ढूँढने में समय लग जाता है। मछलियाँ जो कम हो रही हैं।

चिंटू– मछलियाँ कम हो रही हैं ? पर नदी में तो बहुत सारी मछलियाँ थीं ना ?

मोनू– हाँ मछलियाँ अब पहले से कम हो गयी हैं, क्योंकि लोगों के मछलियों को पकड़ने के तरीके बदल गये हैं। पहले लोग इस बात का ध्यान रखते थे कि मछलियों की संख्या में कमी ना आये और उनके साथ जल में रहने वाले और जीव जन्तुओं का जीवन भी चलता रहे।

निक्की– और अब....... ? अब ऐसा नहीं है क्या ?

मोनू– अब लोग नियमों का पालन नहीं करते। लो, छोटू चाचा भी आ गये। छोटू भाई ! हो गया नाश्ता पानी। चलो, बच्चों को स्कूल छोड़ कर आ जाते हैं।

छोटू– हाँ भाई फिलहाल तो हो ही गया। शाम को फिर कुछ और खोजना पड़ेगा। चलो बच्चों जल्दी चलो, स्कूल के लिए देर हो गयी है।

बच्चे – चलो–चलो पापा, आप लोग पानी में उतरो हम आये फटाफट।

छोटू – लो, आ गया स्कूल। बच्चों शाम को तुम्हें मोनू चाचा ही लायेंगे मैं तो जरा रात के खाने के लिए इंतजाम करने जाउँगा। मोनू भाई! आज शाम को तो आपको ही ये काम करना होगा।

मोनू – चिंता मत करो। तुम आराम से अपना काम करो।

उधर नदी के दूसरे छोर पर सोनपुर गाँव की मछलियाँ, तरबूज, खरबूज और ककड़ियाँ दूर–दूर तक प्रसिद्ध हो रही थी। बढ़ती प्रसिद्धि के कारण माँग बढ़ती जा रही थी। वैसे तो गाँव वाले कछार में खेती अपने पुरखों के समय से ही करते चले आ रहे थे। खेती की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए वो जैविक खाद का ही उपयोग किया करते। लेकिन बढ़ती माँग की आपूर्ति के लिए उन्हें ज्यादा उत्पादन की आवश्यकता पढ़ रही थी, और खेती योग्य जमीन..... ले देकर वही कछार। गाँव वाले वैसे तो सरकार की कृषि सम्बंधी योजनाओं से परिचित थे और अपने माल की गुणवत्ता को भी पहचानते थे, लेकिन बाजार की लगातार बढ़ती माँग ने उनको लालच में घेर लिया। उनको लगता कि यदि खेती में रासायनिक खादों का उपयोग किया जाये तो फसल तो ज्यादा पैदा होगी ही साथ ही तरबूज, खरबूजों के आकार और चमक दोनों ही बढ़ जायेंगे, और मुनाफा तो बढ़ेगा ही पर हाँ थोड़ा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं, लेकिन उससे क्या फर्क पड़ने वाला है, थोड़ा बहुत मिलावट तो चलती है।

इसी लालच के चलते गाँव वासी अपने पुरखों की परंपराओं को भुलाने लग गये। वो भूलने लगे कि इन रासायनिक खादों के परिणाम उनको ही नहीं, जल में रहने वाले सभी प्राणियों को भुगतने होंगे। वो तो केवल इसी बात पर खुश थे कि उनको होने वाला मुनाफा लगातार बढ़ता ही जा रहा है, और गाँव में जनसंख्या भी तो लगातार बढ़ रही है। गाँव वालों को अपने जिन संसाधनों से प्यार था, अब वो उनका ही दोहन करने लग गये। दोहन के कारण भी साफ थे, मुनाफे की चाह और बढ़ता जनसंख्या दबाव।

मोनू – छोटू भाई! सोनपुर गाँव के लोग कितने अच्छे हैं। उन की वजह से जलीय जीवों को कभी कोई दिक्कत नहीं आई। कितने वर्षों से हम सब यहाँ पर अपना जीवन आराम से गुजर बसर कर रहे हैं।

छोटू– भाई! लोग तो अच्छे ही थे, लेकिन अब हालात अच्छे नहीं हैं। अब हमारे जीवन पर संकट के बादल छाने वाले हैं।

मोनू– छोटू दोस्त ऐसी बात नहीं है! यहाँ पर लोग बहुत समझदार हैं, यहाँ सदियों से हमारे पुरखों से लेकर आज तक हम यहाँ सुख से हैं।

छोटू– हाँ अभी तक तो सब ठीक ही था पर अब धीरे–धीरे सब बदल रहा है। देखो ना अब हमें खाना आसानी से कहाँ मिल पा रहा है। पहले कितनी मछलियाँ होती थीं, कोई कमी नहीं थी खाने की। नदी का पानी भी देखो कहाँ उतना स्वच्छ साफ है जितना पहले हुआ करता था।

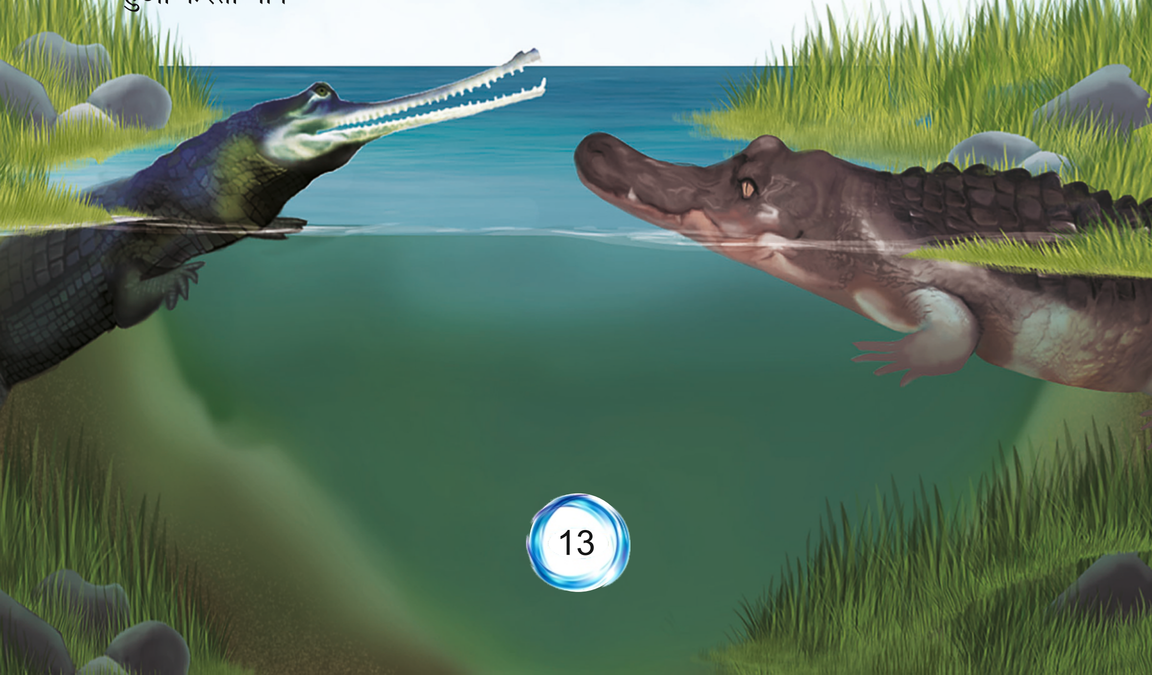

छोटू– ठीक है भैया। मुझे अभी से ही कोशिश करनी होगी तब जा कर शाम को पेट भरने लायक कुछ मिल पायेगा! चलो शाम को मिलते हैं।

छोटू जब गाँव के नजदीक गया! वहाँ नदी के बीचों–बीच गाँव वालों ने एक बड़ा सा महाजाल लगाया हुआ था, और उसमें बहुत सारी छोटी बड़ी मछलियाँ और उनके अण्डे फँसे पड़े हैं। और दो चार कछुए भी।

छोटू के मुँह में पानी आ गया। और थोड़ा उदास भी हो गया सोचने लगा कि ऐसा ही सब चलता रहा तो एक दिन शायद सब खत्म हो जायेगा। जब किसी के छोटे बच्चे और अण्डे ही नहीं बचेंगे तो वो आगे चल कर बड़ी मछली कैसे बनेंगे। और बेचारे कछुए! वो तो बेचारे दिन रात नदी की सफाई किया करते हैं। नदी तंत्र के गिद्ध जो हैं...... ! पर इसी तरह उनका भी हाल होगा तो फिर नदी की स्वच्छता कैसे बनी रह सकती है। सोनपुर गाँव वालों का लालच सबको ले डूबेगा। मैं अगर जाल के नजदीक गया तो कहीं उसमें फँस ना जाऊँ फिर मेरे प्यारे छोटे बच्चों का क्या होगा। नहीं–नहीं....मैं वहाँ नहीं जाउँगा! दूसरी जगह देखता हूँ थोड़ा दूर जाना पड़ेगा, पर बचा तो रहूँगा। पास के जंगल के नजदीक जाना ठीक रहेगा, कभी गया तो नहीं हूँ लेकिन वहाँ गहरा पानी हैं और लोगों का जाना जरा कम ही होता है, शायद कोई कीड़े, मछली वगैरह मिल जायें। जाता हूँ उधर ही!

जंगल के पास की नदी के किनारे –

मोनू– हाँ, बदलाव दिख तो रहा है। लेकिन उसका कारण क्या हो सकता है ?

छोटू– कारण तो बहुत सारे हैं भैया! सबसे बड़ा कारण तो बढ़ता प्रदूषण है। प्रदूषण बढ़ने के भी बहुत से कारण हैं। अब अपने सोनपुर वालों को ही देखो पहले सब कुछ कितना सुखद था। लोग अपने संसाधनों के प्रति संवेदनशील थे। अब लेकिन उनको भी वक्त की हवा लग गई है। उन्हें भी तथाकथित विकास के साथ तालमेल बिठाना है, तो वो भी प्रकृति के प्रति अपने दायित्वों को भूलते जा रहे हैं।

मोनू– हाँ, बात तो सही बोल रहे हो भाई। अब बदल तो बहुत कुछ गया है। देखो नो तुम्हारे लिए खाना जुटाना कितना मुश्किल पड़ रहा है। मछलियाँ तो जैसे रह ही नहीं गई नदी में। गाँव वाले जिस जाल का उपयोग कर रहे हैं वो हैं, भी तो कितना बारीक है उसमें तो बेचारी मछलियों के बच्चे अण्डे सब फँस जाते हैं। धीरे–धीरे मछलियों की कई प्रजातियाँ तो अब दिखनी भी बंद हो गई हैं। ये दोहन ही तो हुआ ना ? गंगा मैया तो एक माँ की भाँति सब का ख्याल रखने वाली हुई उसने तो अपने बच्चों के पालन पोषण का पूरा ख्याल रखा हुआ है, पर बच्चे माँ का ख्याल रखने में असमर्थ हैं। लो बातें करते–करते रास्ते का पता ही नहीं लगा। तुम चिंता मत करो मैं बच्चों को स्कूल से घर ले आऊँगा तुम आराम से शाम के खाने का इंतजाम करो।

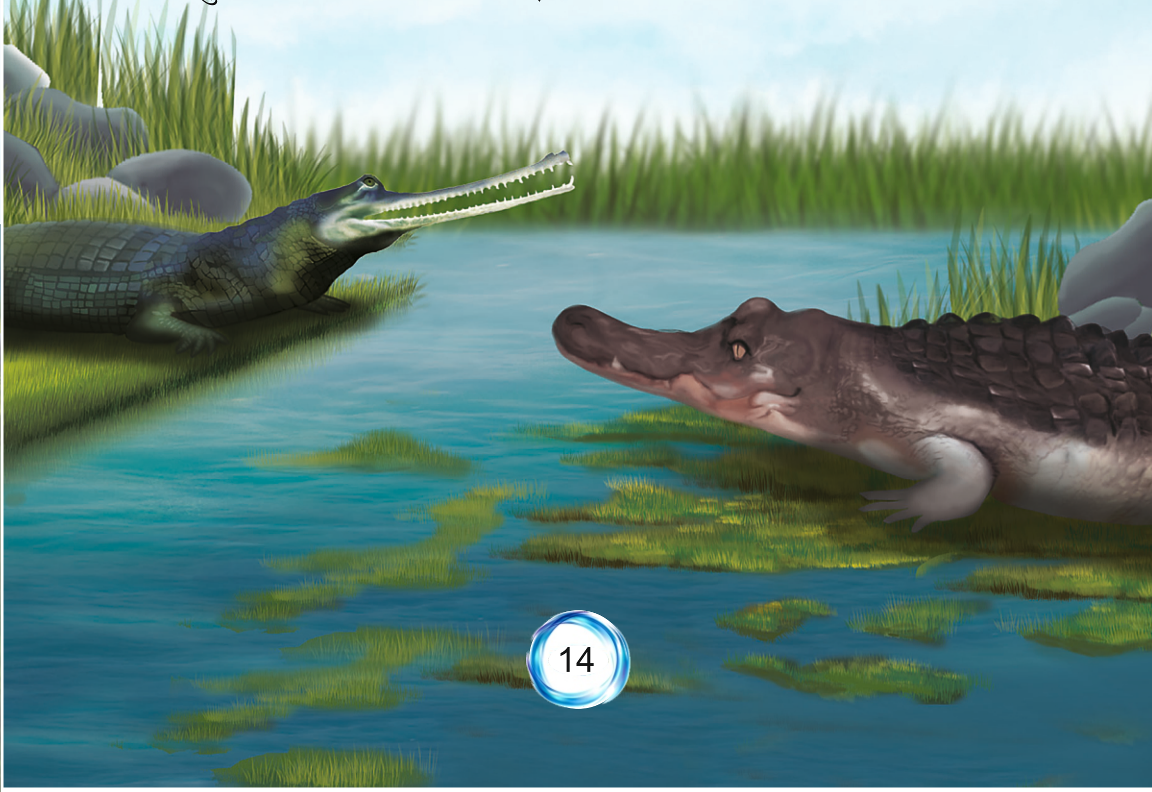

छोटू– यहाँ लगता है, कुछ मिल सकता है! आज तो जुगाड़ हो गया! लगता है, कल से यहीं आना होगा भोजन ले जाने के लिए। जल्दी से दो–चार मछलियाँ ले लूँ कल से थोड़ा जल्दी आना होगा। यहाँ रेत भी काफी साफ है! क्या यहीं बसने के लिए आ जाऊँ...... ? पर मेरे दोस्त मोनू से दूर कैसे रह सकता हूँ। उसे भी कहता हूँ कि यहीं बनाते हैं अपना नया आशियाना। चलो अब घर चला जाये बच्चे भूखे होंगे।

अगले दिन ....

मोनू– अरे छोटू भैया कहाँ हो ? चलो जॉगिंग शॉगिंग योगा वोगा कर लेते हैं। आज देखो मौसम कितना सुहाना है।

छोटू– मोनू भाई पाँच मिनट दो बस तैयार हो कर आता हूँ।

मोनू– क्या बात है...... और दिन तो तुम हमेशा तैयार रहते हो.....आज देर कैसे हो गई ?

छोटू– हाँ मोनू आज देर से सो कर उठा भाई! कल काफी दूर तक खाने की खोज में साइकिल चलानी पड़ी थोड़ा थक गया था। और फिर चिंता के कारण थोड़ा नींद भी देर से आई।

मोनू– चिंता...... ? किस बात की चिंता ! मैं हूँ ना तेरे साथ।

छोटू– हाँ मोनू भाई मुझे पता है, तुम तो हो ही मेरे बचपन के मित्र। हमारी दोस्ती की मिसाल तो सारा सरीसृप जगत देता है। वरना घड़ियाल और मगर की मित्रता कहाँ होती है।

हमारी मित्रता तो मिसाल है! पर तुम तो जानते ही हो कि हम घड़ियालों पर कितना बड़ा संकट आ गया है। पहले की बात और थी हम नदियों के किनारों पर आराम से रहा करते थे। भाई अब तो हम केवल यहाँ भारत में और नेपाल में पाये जाते हैं। तुम्हारे तो कितने सारे रिश्तेदार हैं...... भारत से लेकर सारे दुनियाँ में तुम सब जगह रह लेते हो खारे पानी के समुद्र में भी और मीठे पानी वाली नदियों में भी। तुम्हारी जाति को ज्यादा खतरा जो नहीं है। हम तो अब विलुप्त प्राय: प्रजातियों में हैं........। पता नहीं कब समाप्त हो जायें।

मोनू– छोटू! दोस्त मुझे पता है, थोड़ा चिंता की बात तो है। तुम पर ही नहीं हम सब पर ही खतरा मंडरा रहा है, हम भी तो संवेदनशील प्रजातियों में आ चुके हैं। जबकि हमारी प्रजाति का इतिहास सबसे पुराना है। सदियों से हम आराम से रहते आये थे, पर अब इन्सान अपने कुछ निजी स्वार्थों के लिए हमारा भी शिकार कर रहे हैं। इतना निराश मत हो मेरे दोस्त, सब अच्छा होगा! भगवान पर भरोसा रखो। लो! बात करते–करते हमारा रेत का मैदान भी आ गया चलो रेस लगायें।

छोटू– मैं तो थोड़ा योगा ही करूँगा और थोड़ा ध्यान लगाउँगा। कल काफी कसरत हो गई भाई, इतनी दूर साइकिल चला कर.......पैर दर्द कर रहे हैं। ध्यान लगा कर जरा, मन को शाँत करुँगा यार, अपने बच्चों की बहुत ही फिकर हो रही है।

मोनू – ठीक है ! तुम योगा करो। कल से बच्चों को भी लेकर आते हैं। उन्हें भी तो पता लगे कि सेहत बनाना कितना जरूरी है। केवल मोबाइल कम्प्यूटर से कुछ नहीं होता।

छोटू– हाँ, ये तुमने सही बोला...... बच्चों को भी तो एक्सरसाइज का महत्व पता होना चाहिये। दिन–रात लगे रहते हैं मोबाइल पे गेम खेलने में। बाहर के व्यायामों को तो जानते ही नहीं। हम बचपन में कितने खेल खेलते थे। दौड़ा भागी मची रहती थी दिन भर। घर वाले तो सारे दिन हमारे ऊधम से ही परेशान रहते थे।

मोनू– आह! .... बहुत थक गया आज! पर मजा आ गया! इस मजे को दोगुना बढ़ायेगा रेत में मुँह खोल के शरीर को ठंडा करना। छोटू दोस्त घर की जिम्मेदारियाँ नहीं होती तो मैं तो जिन्दगी भर यहीं मस्ती से पड़ा रहता।

छोटू– हाँ, इस बहाने हम थोड़ा गपशप भी कर लेते हैं। मोनू भाई! एक बात करनी थी, दोस्त कल जहाँ मैं शाम को खाने की खोज में गया था वो जगह थोड़ी ठीक लग रही थी सुरक्षा की नजर से भी और वहाँ लोग कम होने से खाने को भी कुछ ना कुछ मिल सकता है। चलो! दोस्त, वहीं चलकर अपना घर बनायें। वैसे तो मुझे कुछ और घड़ियाल परिवार भी दिखे वहाँ। और रेत भी थी जिसमें हम अपना जो मनोरंजन यहाँ करते हैं वहाँ भी कर सकते हैं, और रेत में हमारे अण्डे भी सुरक्षित रह सकते हैं।

मोनू – बात तो तुम्हारी एक दम सही है। पर......... हम हमेशा से हमारे पूर्वजों के समय से यहीं सोनपुर गाँव के पास ही रहते आये हैं। यहाँ से हमारा पुराना नाता है। और फिर.... .... तुम तो जानते ही हो हम मगर और घडियाल एक प्रजाति के होते हुए भी एक दूसरे से स्वभाव में भिन्न हैं। तुम्हारी और मेरी बात अलग है पर वहाँ और भी तो घड़ियाल हैं वो कहाँ मुझे पसंद करेंगे।

छोटू– हाँ! वो तो है। ये सब मैंने भी सोचा पर मुझे लगा कि मैं अकेला तो जा नहीं सकता तुमसे बात करके देख तो लूं। चलो तुम नहीं जाओगे तो मैं कैसे जा सकता हूँ। दोस्त हम जहाँ भी रहेगे साथ ही रहेंगे। और फिर बात अब तुम्हारी मेरी नहीं हमारे बच्चे भी तो मित्र हैं। चलो देखते हैं! जो भी होगा। बस खाना लेने जाना पड़ेगा उधर की तरफ। घूमने तो चल सकते हो वहाँ ?

मोनू – हाँ! घूमने तो जा ही सकते हैं। चलो इस सन्डे को चलते हैं, बच्चे भी चल लेंगे फैमिली पिकनिक हो जायेगी। बच्चों की माँएं भी खुश हो जायेंगी इस आउटिंग से। फिर पक्का रहा सन्डे को! आज कौन सा वार है भैया ?

छोटू– आज तो बृहस्पतिवार है। अभी तीन दिन हैं। महिलाओं को बोलेंगे कुछ घर से भी बना कर ले चलें।

मोनू – ठीक है, फिर प्रोग्राम पक्का रहा !

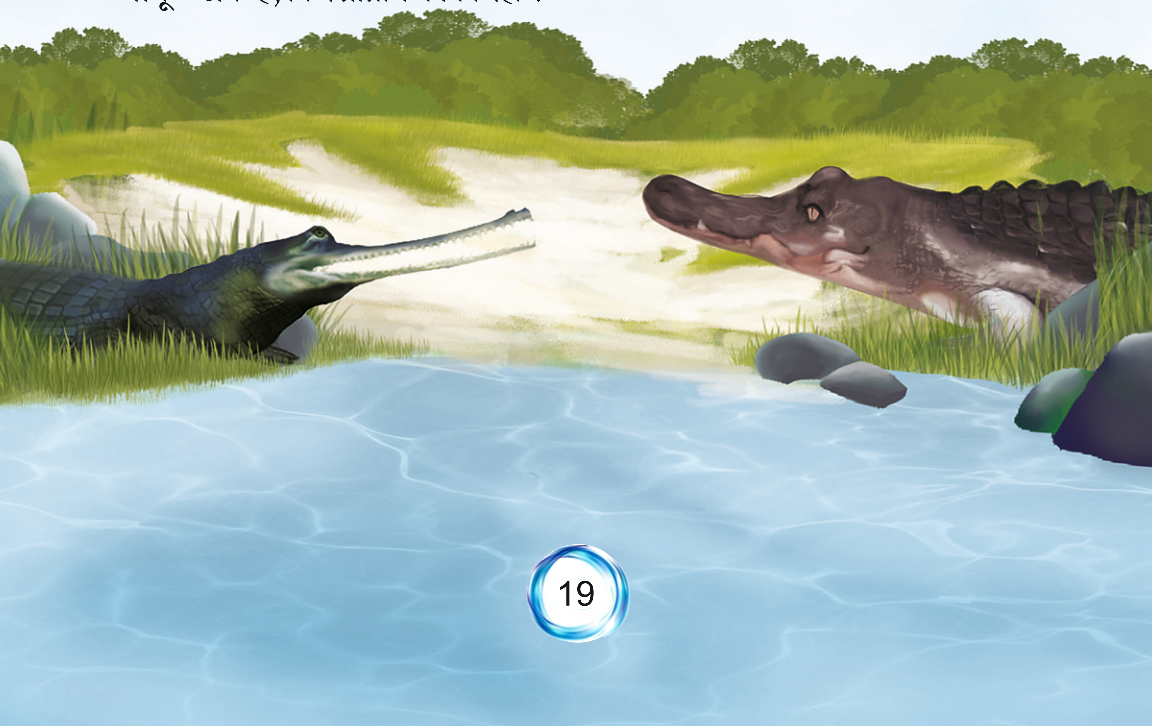

रविवार के दिन..........

मोनू – चलो–चलो सब बच्चे जल्दी से तैयार हो जाओ। जंगल के पास की नदी में चलना है पिकनिक मनाने। अब देर मत करो फटाफट चलो! छोटू..........तैयार हो गये सब......... ?

छोटू– हम सब बिल्कुल रेडी हैं। चलो बच्चों सवार हो जाओ सब हमारी पीठ पर!

बच्चे– ये..................चलो जी चलो ...... पापा मम्मी की पीठ पर चढ़ कर जाने में कितना मजा आता है!

मोनू– अब ज्यादा हिलोगे डुलोगे तो पानी में गिर पड़ोगे ! चुप–चाप बिना शैतानी किये बैठे रहो और नदी में सैर का मजा लो!

टिल्लू– चलो अन्ताक्षरी खेलें। इसमें हिलना तो है नहीं केवल मुँह ही तो खोलना है गाने के लिए।

निक्की – हाँ हाँ चलो खेलते हैं अन्ताक्षरी! शुरू करो अन्ताक्षरी लेकर हरी का नाम।

चिंटू– नहीं, अन्ताक्षरी में मैं हार जाता हूँ! गीत गाते हैं कोई। टिल्लू भाई प्लीज गीत गाते हैं। आप ही शुरू करो हम सब उसमें साथ देंगे।

टिल्लू– तुम सब इतनी बहस करते हो कि कोई काम हो ही नहीं पाता। लो तुम्हारी इसी तू तू मैं मैं से हम जंगल के नजदीक आ गये। अब गीत वापसी में गायेंगे।

निक्की – भैया! वापसी में थक जायेंगे कुछ करने लायक ही नहीं रहेंगे।

नदी के किनारे रेत पर ....

मोनू – आ गये हम! चलो उतरो सब बारी बारी से और सम्भल कर गिर मत जाना।

बच्चे – अरे वाह! ये जगह कितनी सुन्दर है.... ! हम यहीं क्यों नहीं आ जाते सब रहने के लिए। वहाँ सोनपुर गाँव के पास कितना गंदा हो गया है। पानी भी इतना साफ नहीं है। चलो–चलो खेलते हैं हम सब।

मोनू– हाँ मगर दूर मत जाना! पास ही खेलो तब तक हम गप्प शप्प करते हैं। छोटू भाई! जगह तो बहुत सुन्दर और शाँत है, पर दोस्त अपने सोनपुर की तो बात ही कुछ और है। थोड़ा लोग जागरूक हो जाये , तो हम भी अपना जीवन चैन से काट लें!

छोटू– हाँ दोस्त! कोशिशें तो हो रही हैं सुना है पर अभी सब कुछ ठीक होने में वक्त तो लगेगा ही। सुना है कुछ जगहों चम्बल, अभ्यारण्य करतनियाघाट, कॉर्बेट नैशनल पार्क आदि में हमारे संरक्षण के लिए काम किया जा रहा है, आगे देखो अब क्या होता है?

मोनू– सरकार तो अपना काम कर ही रही है दोस्त, पर लोगों को भी जागरूक होना ही पड़ेगा। वरना वो दिन दूर नहीं जब धरती के अन्य विलुप्त हो चुके जीवों में हमारा नाम

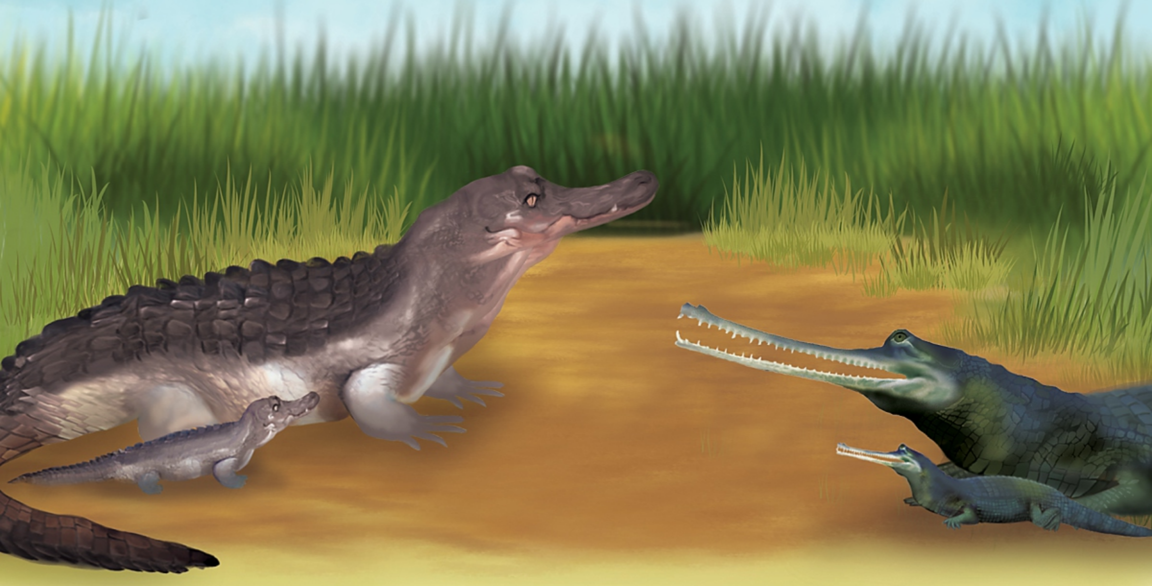

भी आ जायेगा।

चिंटू– पापा–पापा पता है वहाँ रेत में बहुत सारे अण्डे हैं। चलो देखने चलो।

छोटू– नहीं, वहाँ मत जाओ वो घड़ियाल के अण्डे हैं। उनकी माँ तुम्हें वहाँ देखेगी तो पिटाई करेगी। यहीं खेलो पास में। और अब सब आ जाओ यहाँ हम खाना लगा रहे हैं। खा कर थोड़ी देर बाद वापिस जायेंगे।

निक्की – चाचा! अभी और रुको ना! पता है मेरी स्कूल की दोस्त यहीं रहती है। मुझे अभी खेलना है उसके साथ।

मोनू– अच्छे बच्चे बात सुनते हैं! हम जल्दी ही फिर आयेंगे यहाँ, तब तुम आराम से खेलना! चलो अब खाना खाओ थोड़ा सुस्ता के वापिस जाना है।

बच्चे ....ठीक है! पर प्रोमिस करो कि हम जल्दी ही दोबारा यहाँ आयेंगे।

छोटू – प्रॉमिस.... पक्का प्रॉमिस ! हम यहाँ जरूर आयेंगे और तुम तब अपनी दोस्त के साथ जी भर के खेल लेना।

सभी बच्चे दिन भर मजे के बाद दोबारा आने की आस लिए अपने–अपने मम्मी पापा की पीठ पर सवार होकर वापिस सोनपुर की ओर निकल पड़े।

इतिहास और पौराणिक कथाओं में मगर

बच्चों क्या तुम जानते हो कि हिंदू धर्म में मगर या मकर का बहुत महत्व है। हिंदू धर्म शास्त्रों में कई देवताओं के वाहन को मगर के रूप में दर्शाया गया है। गंगा का वाहन भी एक जलीय जीव के रूप में दर्शाया गया है जिसमें उसका मुँह मगर का है, और शरीर किसी अन्य जीव का है। वर्षा के देवता वरूण का वाहन भी मगर ही है। वरूण को समुद्र का देवता भी माना गया है। कामदेव और उनकी पत्नी रति की सवारी भी मगर ही है।

धर्मग्रंथों में सबसे प्रसिद्ध कहानी गजेंद्र मोक्ष की है। जिसके अनुसार एक अभिमानी हाथी को मगर रूपी राक्षस ने नदी में खींच लिया और गजेंद्र कई हजार साल तक उसी अवस्था में संघर्ष करता रहा।

अंत में हार कर उसने भगवान विष्णु को पुकारा, हाथी की करुण पुकार सुनकर भगवान ने अपने सुदर्शन चक्र से उस मकर का संहार किया और गजराज को बचा लिया। एक अन्य कथा के अनुसार आदि गुरू शंकराचार्य बाल्यावस्था में ही सन्यासी बनना चाहते थे, लेकिन उनकी माँ इसके खिलाफ थीं। एक दिन केरल के कलाडी गाँव में अपने घर के पास पेरियार नदी में नहाते समय एक मगरमच्छ ने युवा शंकराचार्य पर हमला कर दिया। माँ ने शंकराचार्य को मगर से बचाने का प्रयास किया लेकिन मगर शंकराचार्य को छोड़ ही नहीं रहा था। तब शंकराचार्य ने माँ से दुनिया को त्यागने तक सन्यासी बनने की अनुमति माँगी, माँ को विवश होकर अनुमति देनी पड़ी शंकराचार्य ने त्याग के मंत्र पढ़े और मगर ने उनको छोड़ दिया।

कुछ अन्य कथाओं में भी मगर का उल्लेख मिलता हैं। हनुमान एक सरोवर में स्नान कर रहे थे, उनको एक विशाल मगर ने पानी के अन्दर पकड़ लिया काफी कोशिशों के बाद

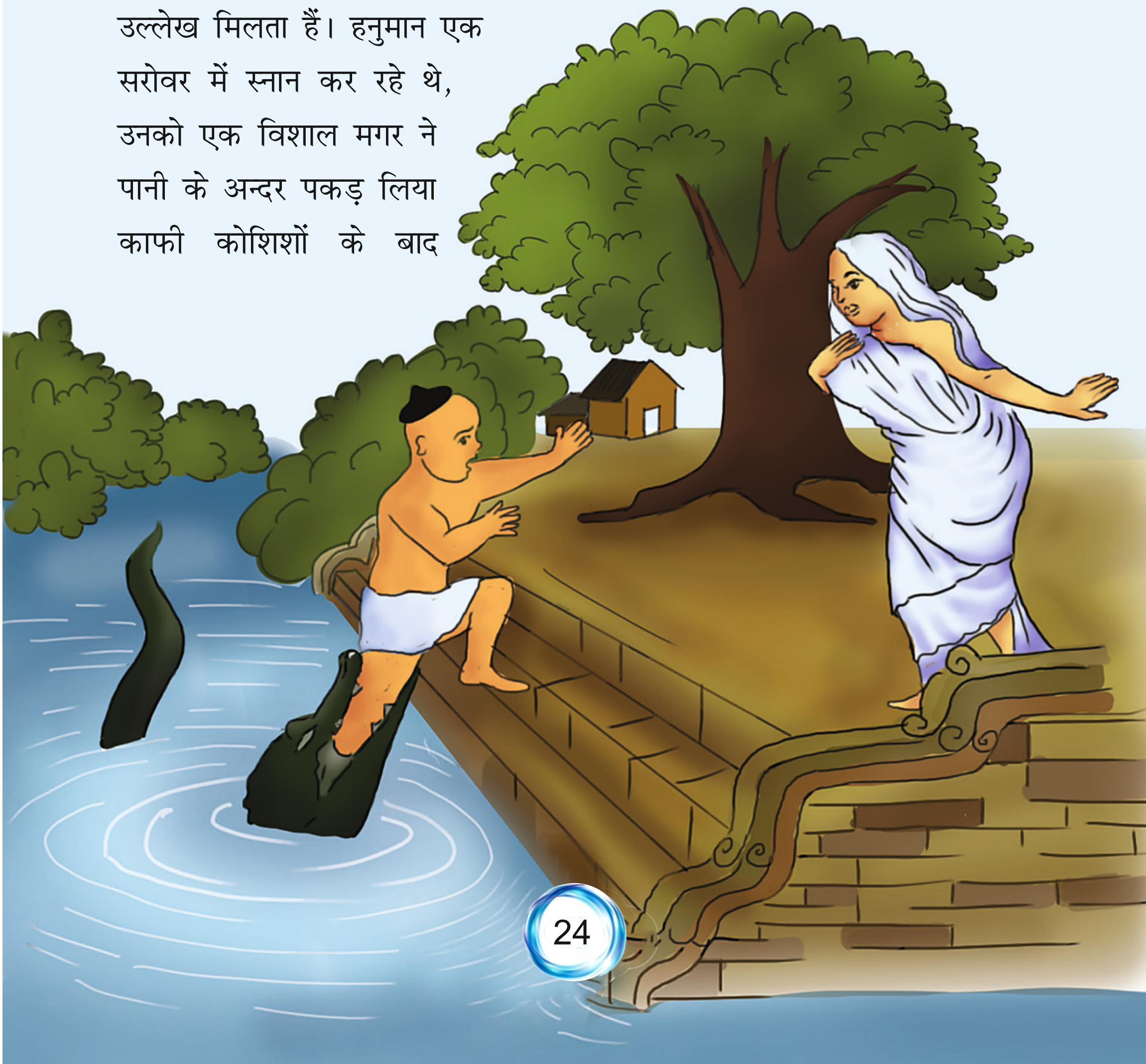

हनुमान ने जब उसे पानी से बाहर निकाला तो वो एक अत्यंत सुंदर युवती में परिवर्तित हो गया उसने हनुमान को बताया कि दक्ष प्रजापति के शाप से वो मगर के रूप में परिवर्तित हो गई थी, और हनुमान जी ने उसका उद्धार किया। इसी प्रकार जब हनुमान जी जब लंका दहन कर वापिस आ रहे थे उनके पसीने की बूँद समुद्र में गिरी जिसे एक मछली ने निगल लिया तब हनुमान जी के पुत्र मकरध्वज का जन्म हुआ।

ज्ञान ध्यान की बात करें

प्यारे बाल गंगा प्रहरी दोस्तों! आप बाल गंगा प्रहरी तो बन गये! पर क्या आप गंगा में रहने वाले अपने जलीय दोस्तों को पहचान सकते हो? हमें पता भी तो होना चाहिये ना कि मगर और घड़ियाल में क्या अन्तर होता है? देखने में तो दोनों ही एक जैसे लगते हैं। वैसे तो हमने कहानी में बहुत स्थानों पर ये बताने की कोशिश की है, पर हम असली मगर और असली घड़ियाल को अगर सामने आ गये तो कैसे पहचानोगे। जहाँ उनमें कुछ समानताएं होती हैं वहीं उनमें कुछ अंतर भी हैं।

पहले बात करें समानताओं की

मगरमच्छ और घड़ियाल दोनों ही बड़े सरीसृप हैं, और क्रोकोडीलिया गण से सम्बंधित हैं। दोनों में ही मादा घोंसला बनाती है और अण्डे देती है। दोनों ही जलचर हैं और अपने जीवन का ज्यादा समय पानी में व्यतीत करते हैं। अच्छी तरह तैर सकते हैं और पानी में रह कर शिकार करते हैं। दोनों ही शिकारी हैं और अपने शिकार को पकड़ने के लिए धैर्य और ताकत का उपयोग करते हैं, और आमतौर पर घात लगाकर शिकार करते हैं। दोनों के पास विकसित फेफड़े होते हैं और वायुवीय श्वसन करते हैं तथा सांस लेने के लिए पानी की सतह पर आते हैं।

घड़ियाल भारतीय उपमहाद्वीप की तेज बहने वाली नदियों में पाये जाते हैं, जिनमें रेतीले किनारे होते हैं। एक समय में भारत में व्यापक रूप से फैले हुए थे लेकिन वर्तमान में नेपाल में ताप्ती तथा नारायणी नदियों में और भारत में चंबल, गंगा तथा घाघरा में पाये जाते हैं।

मगर को अवसरवादी और सर्वहारी भोजनकर्ता के रूप में जाना जाता है, जो मछलियों, पक्षियों, स्तनधारियों के अतिरिक्त मृत जानवरों का सड़ागला माँस भी खा लेते हैं, वहीं घड़ियाल अपने आहार के लिए मुख्य रूप से मछलियों पर ही निर्भर रहते हैं।

मादा मगर मुख्य रूप से वनस्पतियों तथा मिट्टी से अपना घोंसला तैयार करती है, और वो अपने घोंसले की सुरक्षा के लिए अक्रामक हो जाती हैं। घड़ियाल मादा गहरी नदी के रेतीले तटों एवं टापुओं में खड्डा खोद कर अपना घोंसला बनाती हैं और मगर की तुलना में कम अक्रामक होती हैं।

दोनों के पास तेज और मजबूत दाँत होते हैं, जो शिकार को पकड़ने व काटने में मदद् करते हैं। दोनों उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाये जाते हैं, जहाँ जलवायु गर्म होती है, लेकिन उनके शारिरिक लक्षणों, आवास और व्यवहार में काफी अंतर है।

तो आइये पहले जानते हैं कि दोनों में क्या अंतर है। मगरमच्छ के थूथन का आकार चौड़ा वी शेप का होता है, जो विभिन्न प्रकार के आहार जैसे स्तनधारी, पक्षियों और मछलियों के लिए उपयुक्त होता है। वहीं घड़ियाल लम्बे, पतले और संकरे थूथन के होते हैं। जिनमें आपस में जुड़ने वाले तीखे दाँत होते हैं।

जो मछलियों को पकड़ने के लिए अत्यधिक विशिष्ट होते हैं। मगर का थूथन चौड़े होने के कारण मुँह बंद होने पर उनके ऊपर नीचे के दांत दिखलाई पड़ते हैं। जबकि घड़ियाल के मुँह में 100 से ज्यादा नुकीले दाँत होने के बावजूद मुँह बंद होने पर कम दिखलाई पड़ते हैं। मगरमच्छ का शरीर मजबूत तथा पूँछ चौड़ी तथा माँसल होती हैं। वहीं घड़ियाल का शरीर पतला तथा पूँछ कम माँसल होती है, जो उन्हें तेज बहने वाली नदियों में तैरने में मदद् करती है। मगरमच्छ की त्वचा में हक्रियों की प्लेटें (ऑस्टियोडर्म्स) होती हैं जो, कवच जैसी सुरक्षा प्रदान करती हैं। मगरमच्छों की तुलना में कम व छोटे स्क्यूट्स होते हैं।

मगर मीठे पानी के आवासों नदियों झीलों तथा दलदलों में पाये जाते हैं। कुछ मगर प्रजातियाँ, तटीय खारे एवं समुद्री पर्यावरण में भी पाई जाती हैं। इनका अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण पूर्व एशिया, उत्तरी अमेरिका तथा दक्षिण अमेरिका में वितरण है।

छायाचित्रः कुनाल जैन

घड़ियाल

घड़ियाल पहले सिंधु, बेतवा, ब्रहम्पुत्र तथा महानदी में पाये जाते थे, परंतु वर्तमान में ये भारत में केवल गंगा नदी, चंबल, रामगंगा, गिरवा तथा नेपाल में ताप्ती तथा नारायणी आदि सहायक नदियों तक ही सीमित रह गये हैं। वर्तमान में राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण्य, करतनियाघाट वन्यजीव अभ्यारण्य, कॉर्बेट राष्ट्रीय अभ्यारण्य, केन एवं सोन घड़ियाल अभ्यारण्य में घड़ियालों को संरक्षित किया जा रहा है।

वयस्क घड़ियाल 3.5 से 4.5 मीटर तक लम्बे होते हैं, और इनकी थूथन भी लम्बी होती है। वयस्क नर के थूथन पर घड़े के आकार की आकृति होती है। इनके झिल्लीदार पैर तैरने मे सहायक होते हैं, जिनकी वजह से ये जमीन पर कम ही चल पाते हैं। मार्च से जून के महीनों में ये नदी के रेतीले तटों एवं टापुओं पर अपना घोंसला बना कर 40 से 80 तक अण्डे देते हैं। अण्डों से बच्चे लगभग 70 दिन में निकलते हैं।

वयस्क घड़ियाल मुख्यतयः मछली पर ही निर्भर करते हैं, परंतु इनके बच्चे जलीय कीड़े और मेंढक भी खाते हैं। ये ज्यादातर तेज धार गहरी नदी, ऊंचे रेतीले टापुओं एवं तट वाले इलाकों में पाये जाते हैं। अवैध शिकार, मछलियों के अत्यधिक दोहन के कारण इनके भोजन की कमी, जाल में फंस कर मरना तथा अण्डे संग्रहण इनके संकट के मुख्य कारण हैं।

छायाचित्र: सौरव गावन

मीठे पानी के मगरमच्छ

आपको पता है कि मगरमच्छ प्रजाति के प्राणी धरती पर लगभग 65 लाख साल पहले विकसित हुए? वर्तमान समय में इनकी केवल 23 ही प्रजातियाँ पाई जाती हैं। भारत में मीठे और खारे पानी के मगर पाये जाते हैं।

मीठे पानी के मगर का वैज्ञानिक नाम "क्रोकोडायलस पालुसिट्रस" है। ये मगरमच्छ भारत, श्रीलंका, पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, तथा पूर्वी ईरान में पाये जाते हैं। भारत में ये मध्य गंगा (बिहार एवं झारखंड), चंबल (राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश) एवं गुजरात में पाये जाते हैं। वयस्क मगर 4.5 मीटर तक लम्बे होते हैं। इनके जबड़े काफी चौड़े शरीर के ऊपरी हिस्सों पर सख्त कवच होता है। मार्च से जून के महीनों में ये गहरी नदी के रेतीले तटों एवं टापुओं पर गड्ढे खोद कर अपने घोंसले बनाते है जिनमें वे 25 से 30 अण्डे देते हैं। अण्डों से बच्चे लगभग 55 से 75 दिन में बाहर आते हैं।

ये पानी में घात लगाकर मछली, मेंढक, कछुए, चिड़िया एवं बन्दर जैसे प्राणियों का शिकार करते हैं। बच्चे छोटे जलीय जीव और कीड़े-मकोड़ों का शिकार करते हैं। ये झील, तालाब और नदियों में रहते हैं। भोजन की तलाश में कभी-कभी बांधों और नहरों में भी आ जाते हैं। बांध द्वारा छोड़ा गया पानी, नदी के जलस्तर में परिवर्तन, रेत खनन, अत्यधिक मछली दोहन के कारण भोजन की कमी, जाल में फँस कर मर जाना, अण्डे संग्रहण एवं अवैध शिकार इनके संकट के मुख्य कारण हैं।

छायाचित्र: नरिमन वजीफदार

खारे पानी के मगर

खारे पानी के मगर का वैज्ञानिक नाम "क्रोकोडायलस पोरोसस" है। मगरमच्छों की यह प्रजाति भारत के पूर्वी समुद्री तटों में पाये जाती हैं। इसकी प्रमुख आबादी भीतर कनिका वन्यजीव अभ्यारण्य, ओडिशा, सुन्दरवन और खाड़ियों में पाई जाती है।

नर मगरमच्छ की लंबाई 2.7 से 3.1 मी0 होती है। इसका सिर बड़ा और आँखों के नीचे से थूथन तक मध्य भाग में उभार रहता है। वयस्क मगर मिट्टी के रंग का होता है। पूँछ में पीली और काली धारियाँ होती हैं। नवम्बर से मार्च के महीनों में नदी या समुद्र के किनारे मिट्टी, झाड़ी, में अपना घोंसला बनाते हैं, जिसमें लगभग 40 से 60 तक अण्डे होते हैं। अण्डे से बच्चे लगभग 55 से 75 दिन में निकलते हैं। वयस्क मगर कीड़े, केकड़े, कछुए, साँप, पक्षी, भैंस, जंगली सुअर, और बंदरों का शिकार करते हैं।

छोटे मगरमच्छ कीड़े-मकोड़ों मेंढकों, छोटी मछलियाँ साँपों आदि का शिकार करते हैं। यह मीठे पानी व खारे पानी दोनों में रह सकते हैं, एवं समुद्र तटीय खाड़ी, तटीय दलदल एवं बड़ी नदियों के डेल्टा में पाये जाते हैं।

इस प्रजाति का अवैध शिकार, निवास स्थलों की क्षति, समुद्री लहरों से घोंसलों का विनाश से इनकी आबादी पर असर पड़ रहा है।

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

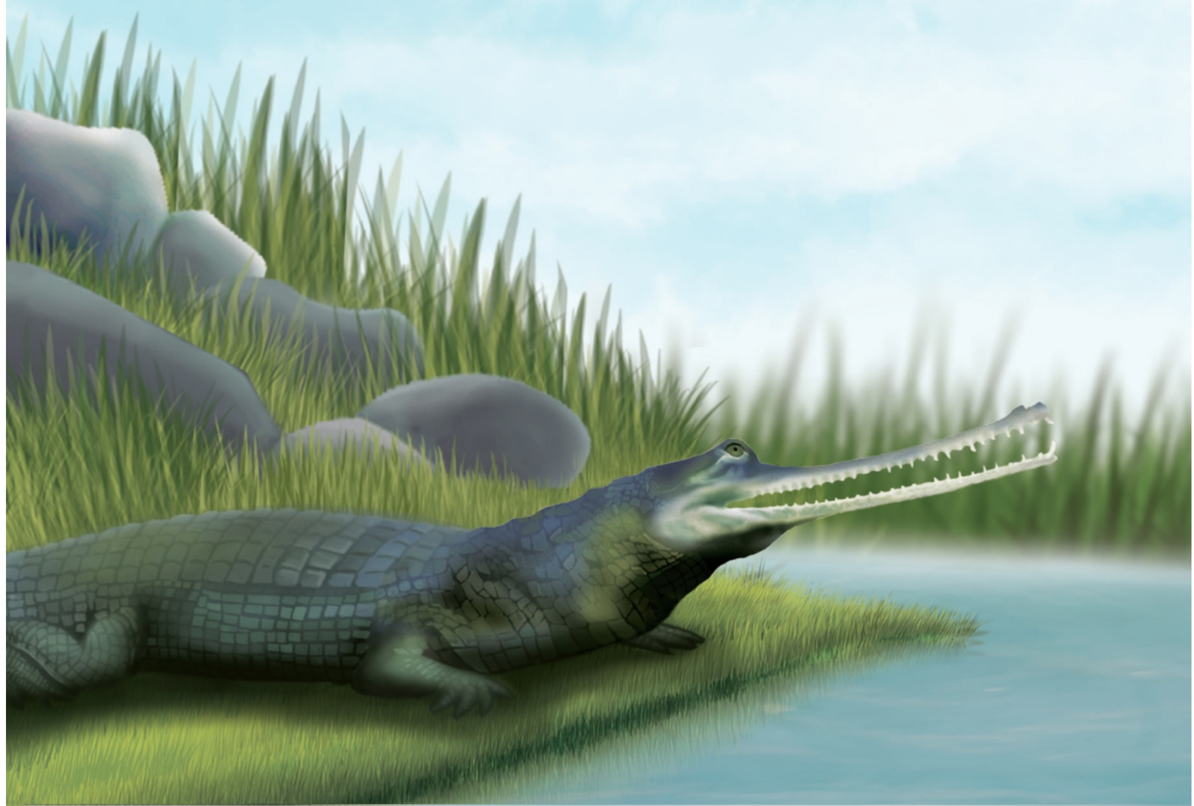

बाल गंगा प्रहरी

NMCG

National Mission for Clean Ganga, Department of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti, Major Dhyan Chand Stadium, India Gate, New Delhi - 110001

GACMC

Ganga Aqualife Conservation Monitoring Centre Wildlife Institute of India, Dehradun
nmcg@wii.gov.in

Wildlife Institute Of India

Chandrabani, Dehradun-248001, Uttarakhand
t.: +91135 2640114-15, +91135 2646100,

www.wii.gov.in/national_mission_for_clean_ganga